नवम्बर: 2025

वर्ष : 9 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, नवंबर 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का नवम्बर 2025 अंक आप सभी को दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत है।

दीपावली दीपों का पर्व है। यह त्योहार हमें यह संदेश देता है कि जिस प्रकार दीपों की लड़ी घने अंधकार को ख़त्म करती है उसी प्रकार हम अपने जीवन संघर्ष को विवेक और ज्ञानरूपी प्रकाश से गौरवान्वित कर सकते हैं। शरद काल और कार्तिक मास में मनाई जाने वाली त्योहारों में दीपावली और गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। गुरु पूर्णिमा अर्थात सिक्खों के प्रथम गुरु, नानक देव जी का जन्म दिवस।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में अक्टूबर माह के हुये कार्यकलापों को दिखाया गया है।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

सुंदरबन में जीवन परिवर्तन की दिशा में कदम: आईसीएआर–सीआईएफआरआई की मत्स्य पालन पहल ने पकड़ी रफ़्तार

सतत ग्रामीण विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल के रूप में, आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–सीआईएफआरआई) ने कुलतोली मिलन तीर्थ सोसाइटी एवं भारतीय स्टेट बैंक (कोलकाता सर्कल) के सहयोग से भारतीय सुंदरबन क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी मत्स्य पालन परियोजना का शुभारंभ किया है।

यह परियोजना कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) के अंतर्गत संचालित की जा रही है, जिसका उद्देश्य 100 परिवारों को पिछवाड़े तालाब संस्कृति (backyard pond culture) के माध्यम से सशक्त बनाना है — जिससे समुदाय आधारित आजीविका संवर्धन का एक प्रेरक मॉडल विकसित किया जा सके।

इस वर्ष की शुरुआत में, प्रत्येक लाभार्थी परिवार को 10 किलोग्राम मछली बीज तथा 120 किलोग्राम आहार प्रदान किया गया था ताकि वे अपने घरों के तालाबों में मत्स्य पालन आरंभ कर सकें। 9 अक्टूबर, 2025 को परियोजना ने एक नए चरण में प्रवेश किया, जब तीन दिवसीय व्यवहारिक (hands-on) प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इन सत्रों का उद्देश्य लाभार्थियों को आवश्यक मत्स्य पालन तकनीकों एवं वित्तीय साक्षरता से सशक्त बनाना था, जिससे दीर्घकालिक सततता और आत्मनिर्भरता सुनिश्चित की जा सके।

उद्घाटन समारोह में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने कहा कि मत्स्य पालन से प्राप्त बचत को सतत विकास का आधार स्तंभ बनाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा,"यदि यह पहल एक आदर्श ग्राम (Model Village) के रूप में सफल होती है, तो यह अनेक परिवारों के लिए सतत भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।"

लोकमान मोल्ला, अध्यक्ष, कुलतोली मिलन तीर्थ सोसाइटी, ने डॉ. दास के दूरदर्शी नेतृत्व और वैज्ञानिक योगदान की सराहना करते हुए इस परियोजना को "अनुसंधान, सामुदायिक सहभागिता और वित्तीय सशक्तिकरण के समन्वय से बना एक ऐतिहासिक कदम बताया।"

वैज्ञानिक दृष्टि से सटीक कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु, निदेशक एवं आईसीएआर–सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों ने प्रत्येक तालाब का स्थल निरीक्षण किया और लाभार्थियों को व्यक्तिगत तकनीकी परामर्श एवं सहयोग प्रदान किया। इन हस्तक्षेपों से उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि और परिवारों की आय में संभावित दुगुनी बढ़ोतरी की संभावना है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों को Macrobrachium rosenbergii (मीठे पानी की झींगा प्रजाति) के 500 बीज भी वितरित किए गए।

यह पहल केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है — यह क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा, पारिस्थितिकीय लचीलापन (ecological resilience) और सामाजिक एकजुटता को भी सुदृढ़ कर रही है।

भारत के जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों में से एक, सुंदरबन की यह समुदाय-आधारित पहल, समावेशी और विज्ञान-आधारित विकास की एक नई दिशा प्रस्तुत कर रही है।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के कुशल नेतृत्व में, कार्यक्रम का सफल आयोजन आईसीएआर–सीआईएफआरआई के निम्नलिखित कर्मियों द्वारा किया गया: डॉ. अपर्णा रॉय, श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, श्री कौशिक मंडल, डॉ. श्रेया भट्टाचार्य, एवं श्री अनीत मंडल,

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY) के शुभारंभ अवसर पर संस्थान द्वारा 745 किसानों तक पहुँच

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY) का उद्घाटन समारोह आज भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की प्रमुख पहलों का शुभारंभ किया। इस अवसर को प्रभावी बनाने हेतु देशभर में सभी आईसीएआर संस्थानों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा समानांतर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से जुड़े अधिकारी, वैज्ञानिक, किसान एवं अन्य हितधारकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) द्वारा दो कार्यक्रम आयोजित किए गए—एक ऑफ-कैंपस तथा दूसरा संस्थान मुख्यालय में। ऑफ-कैंपस कार्यक्रम सुंदरबन, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल में आयोजित किया गया,

जिसमें **677 महिला किसानों सहित कुल 745 किसानों** ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्रीकांत सामंता

(विभागाध्यक्ष), डॉ. आर. के. मन्ना (विभागाध्यक्ष), डॉ. अरुण पंडित (प्रभारी, ईपीयू) तथा अन्य वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत रबी मौसम (शीतकाल) में लघु-पैमाने की जलीय कृषि हेतु पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेस पर संक्षिप्त जानकारी के साथ हुई। साथ ही प्राकृतिक खेती के विभिन्न पहलुओं पर किसानों के साथ विस्तार से चर्चा की गई। सुदूर सुंदरबन क्षेत्र में किसानों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का **लाइव प्रसारण** भी आयोजित किया गया।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में एक **संवेदीकरण कार्यशाला** आयोजित की गई, जिसमें **136 कर्मचारियों** ने भाग लिया। इस दौरान मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं पर चर्चा की गई। **डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई**, ने PMDDKY के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह योजना सतत कृषि एवं मत्स्यिकी पद्धतियों को बढ़ावा देने, उत्पादकता में सुधार, संसाधनों के कुशल उपयोग तथा नवोन्मेषी तकनीकों एवं समेकित दृष्टिकोण के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि करने हेतु प्रारंभ की गई है। संस्थान के कर्मचारियों ने भी माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा।

कई प्रतिभागियों ने साक्ष्य-आधारित एवं प्रौद्योगिकी-प्रेरित पहलों के माध्यम से किसानों के समर्थन हेतु सरकार के निरंतर प्रयासों की सराहना की। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY) का शुभारंभ **विकसित भारत @2047** की परिकल्पना के अनुरूप एक सतत, उत्पादक एवं समृद्ध कृषि एवं मत्स्यिकी प्रणाली के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आईसीएआर–वर्ल्डफिश सहयोग के अंतर्गत असम के तामरंगा बील में सिस्टोमस सराना की पेन कल्चर प्रदर्शन

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने आईसीएआर–वर्ल्डफिश सहयोगी परियोजना के अंतर्गत असम के बोंगाईगांव जिले के तामरंगा बील में **सिस्टोमस सराना (ऑलिव बार्ब)** का **सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन एनक्लोज़र** में सफल **फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन** किया। पेन में पाली गई मछलियों की सफल कटाई के अवसर पर **"पेन में पाली गई मछलियों की कटाई"** विषय पर एक **फील्ड डे** तथा **"आजीविका हेतु बीलों में पेन कल्चर"** विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 14.10.2025 को तामरंगा बील में किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन **डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर** के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। इसमें **डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख**, तथा **डॉ. बि. के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी** का मार्गदर्शन रहा। कार्यक्रम का समन्वय **डॉ. प्रणोब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक** एवं **श्री एम. होक, वाईपी-II**, आईसीएआर-सीआईएफआरआई आरसी, गुवाहाटी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में **श्री हारुन रशीद मंडल, उप-विभागीय मत्स्य अधिकारी, अभयपुरी, बोंगाईगांव (असम सरकार)** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। **श्री पी. कलिता, जिला मत्स्य विकास अधिकारी** ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की। इस कार्यक्रम में बील के पट्टेदार, मछली पालक, अधिकारी एवं वैज्ञानिकों सहित कुल **60 प्रतिभागियों** ने भाग लिया।

डॉ. पी. दास ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए दिनभर चलने वाले कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। **डॉ. बि. के. भट्टाचार्य** ने बील में संस्थान द्वारा किए गए सफल पेन कल्चर प्रदर्शन का विवरण प्रस्तुत किया तथा स्थानीय मछुआरों की आजीविका सुधार में बील मत्स्यिकी की भूमिका पर चर्चा की। **डॉ. बि. के. दास** ने सभा को संबोधित करते हुए पश्चिम बंगाल एवं असम में चल रही आईसीएआर–

वर्ल्डफिश सहयोगी परियोजना की गतिविधियों की जानकारी दी तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में खुले जल मत्स्यिकी के विकास हेतु संस्थान की पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बील मत्स्यिकी, विशेषकर पेन कल्चर के सतत प्रबंधन के लिए समुदाय की भागीदारी पर जोर दिया और तामरंगा बील में उच्च-मूल्य प्रजातियों के विविधीकरण हेतु निरंतर प्रयास का आश्वासन दिया। साथ ही, बील पर निर्भर मछुआरों की आजीविका सुधार के लिए तकनीकी एवं आवश्यक इनपुट सहायता प्रदान करने का भरोसा दिलाया।

श्री पी. कलिता ने मछुआरों/किसानों के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी मत्स्य विकास योजनाओं की जानकारी दी तथा बीमा योजनाओं का लाभ उठाने का आग्रह किया। **श्री हारुन रशीद मंडल** ने बील में उच्च-मूल्य मछलियों के पेन कल्चर के सफल प्रदर्शन के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई की सराहना की और बड़े पैमाने पर इसे अपनाने का आह्वान किया। **श्री उत्तम कुमार दास**, तामरंगा बील के पट्टेदार, ने तकनीकी एवं इनपुट सहायता के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी सहयोग जारी रखने का अनुरोध किया। कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों ने बील मत्स्यिकी प्रबंधन से संबंधित प्रतिभागियों के प्रश्नों का समाधान किया। अंत में **डॉ. एस. बोरा** द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा गुवाहाटी में तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली पर कार्यशाला का आयोजन

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) द्वारा 17 अक्टूबर, 2025 को अपने गुवाहाटी

केंद्र में “तनाव-मुक्त मछली परिवहन: हितधारक परामर्श-सह-प्रदर्शन” विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य सुरक्षित मछली परिवहन हेतु पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा देना तथा क्षेत्र के मछली पालकों और हैचरी संचालकों की आजीविका में सुधार करना था। इस अवसर पर आईसीएआर-सीआईएफआरआई के पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद ‘सीआईएफआरआई फिश तनावहरी’ को भी प्रोत्साहित किया गया, जो जीवित मछली एवं मत्स्य बीज के परिवहन में प्रभावी रूप से उपयोगी है।

कार्यशाला में आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों, असम कृषि विश्वविद्यालय (AAU) के शिक्षाविदों, असम मत्स्य विभाग के अधिकारियों, एनएफडीबी के अधिकारियों, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों, प्रगतिशील मछली पालकों तथा मीडिया प्रतिनिधियों सहित कुल 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने संस्थान की किसान-हितैषी नवाचारों पर बल दिया तथा परिवहन के दौरान मछलियों में तनाव एवं मृत्यु दर को कम करने हेतु जैविक उत्पाद 'सीआईएफआरआई फिश तनावहरी' की उपयोगिता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि यह कार्यशाला वर्ष के प्रारंभ में असम में आयोजित राज्यपाल सम्मेलन के दौरान किसानों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के अनुपालन में आयोजित की गई है।

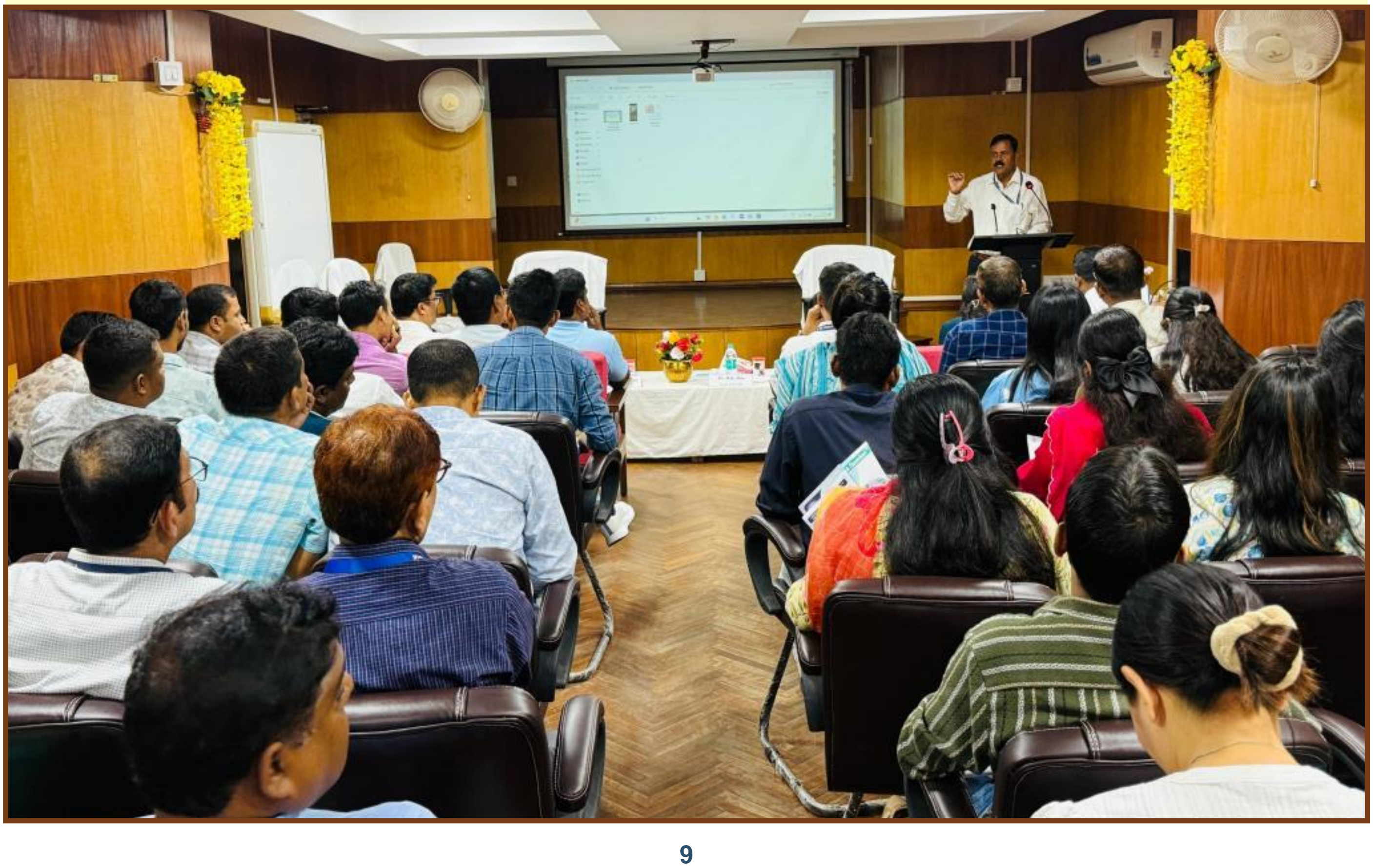

डॉ. पी. सी. भुइयां, अधिष्ठाता, मत्स्य महाविद्यालय, एएयू, रहा ने मछली पालकों के हित में इस उपयोगी उत्पाद के विकास के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई के प्रयासों की सराहना की। डॉ. आर. सी. बर्मन, संयुक्त निदेशक, मत्स्य विभाग, असम सरकार ने कहा कि यह उत्पाद राज्य के जलीय कृषि क्षेत्र में जीवित मछली एवं बीज परिवहन से जुड़ी समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध होगा और उन्होंने राज्य के विभिन्न भागों में ऐसे और कार्यक्रम आयोजित करने का आग्रह किया।

डॉ. कंचन सैकिया, प्रभारी, आईएआरआई-असम, गेरुआ केंद्र, गुवाहाटी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आईसीएआर-सीआईएफआरआई के साथ सहयोग की इच्छा व्यक्त की। श्री ए. के. बोरा, प्रभारी, एनएफडीबी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने राज्य में जलीय कृषि से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों हेतु किसानों एवं उद्यमियों को एनएफडीबी के सहयोग का आश्वासन दिया।

तकनीकी एवं प्रदर्शन सत्र के दौरान डॉ. बि. के. दास ने तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली पर विस्तृत प्रस्तुति दी। इस अवसर पर उत्पाद का प्रत्यक्ष प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें आईसीएआर-सीआईएफआरआई के डॉ. एच. चौधरी, डॉ. ए. के. बेड़ा, डॉ. डी. जे. सरकार तथा ग्लैकस प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने उत्पाद की प्रभावशीलता पर संतोष व्यक्त किया तथा कई प्रतिभागियों ने इसे क्षेत्र में अपनाने में रुचि दिखाई।

इंटरैक्टिव सत्र में आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों एवं एएयू के प्राध्यापकों ने जीवित मछली एवं बीज परिवहन से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रतिभागियों के साथ चर्चा की। कार्यक्रम का समापन डॉ. पी. दास द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा आर्द्रभूमि मत्स्यिकी के पारितंत्र-आधारित प्रबंधन पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर द्वारा “आर्द्रभूमि मत्स्यिकी का पारितंत्र-आधारित प्रबंधन” विषय पर 8 से 14 अक्टूबर, 2025 तक एक सप्ताह-व्यापी राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिन्होंने इस कार्यक्रम में पाठ्यक्रम निदेशक की भूमिका भी निभाई।

इस प्रशिक्षण में कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय (रांची), विद्यासागर कॉलेज (कोलकाता) एवं पी. के. कॉलेज (कांथी, पश्चिम बंगाल) के 24 छात्र तथा डॉ. एम.जी.आर. फिशरीज कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, पोननेरी, तमिलनाडु के एक संकाय सदस्य शामिल थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बि. के. दास द्वारा संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों एवं प्रभारी अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने आर्द्रभूमि मत्स्यिकी के प्रबंधन हेतु समग्र एवं पारितंत्र-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आर्द्रभूमियों के पारिस्थितिक महत्व को रेखांकित करते हुए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने तथा बाढ़क्षेत्रीय आर्द्रभूमियों के सतत प्रबंधन हेतु प्रकृति-आधारित समाधानों को

अपनाने का आह्वान किया। साथ ही, उन्होंने भारत की अंतर्स्थलीय खुले जल की मत्स्यिकी का संक्षिप्त परिचय देते हुए आर्द्रभूमि मत्स्यिकी पर विशेष ध्यान केंद्रित किया।

डॉ. आर. के. मन्ना, पाठ्यक्रम समन्वयक एवं आरडब्ल्यूएफ प्रभाग के प्रमुख, ने देशभर में आर्द्रभूमि मत्स्यिकी में हो रही गिरावट के संदर्भ में इस प्रशिक्षण की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को पारितंत्र-आधारित आर्द्रभूमि मत्स्यिकी प्रबंधन के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं की व्यापक समझ प्रदान करना था।

प्रशिक्षण सत्रों में आर्द्रभूमियों की पारितंत्रीय सेवाएँ एवं उनका मूल्यांकन, बाढ़क्षेत्रीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी, मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन

तथा लघु स्वदेशी मछली प्रजातियों की भूमिका जैसे विषयों को शामिल किया गया। इसके अतिरिक्त, माइक्रोप्लास्टिक एवं भारी धातु प्रदूषण जैसी उभरती चुनौतियों तथा मत्स्यिकी में जीआईएस, रिमोट सेंसिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं ड्रोन तकनीकों के अनुप्रयोग पर भी चर्चा की गई।

व्यावहारिक सत्रों के अंतर्गत प्रतिभागियों को मछली वर्गिकी, जल एवं अवसाद गुणवत्ता आकलन, प्लवक एवं जलीय पौधों का अध्ययन तथा पारितंत्रीय मूल्यांकन हेतु सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही, मत्स्य उत्पादन आकलन, पोषक स्तर निर्धारण तथा सूचकांक-आधारित पारिस्थितिक स्वास्थ्य आकलन तकनीकों से भी अवगत कराया गया।

प्रशिक्षण के दौरान नादिया जिला, पश्चिम बंगाल स्थित चमरदह आर्द्रभूमि का एक दिवसीय क्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया, जिससे प्रतिभागियों को आर्द्रभूमि पारितंत्र एवं डेटा संग्रह विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। समापन एवं प्रतिपुष्टि सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की व्यापकता, व्यावहारिक उपयोगिता, क्षेत्रीय नमूना संग्रह तथा प्रयोगशाला प्रदर्शन की विशेष रूप से सराहना की।

कार्यक्रम का सफल समन्वय डॉ. आर. के. मन्ना, डॉ. लियांथुआमलुआइया एवं डॉ. प्रीतिज्योति माझी द्वारा किया गया, जिनके प्रयासों से यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

इस पहल के माध्यम से आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने एक बार फिर सतत अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी प्रबंधन को बढ़ावा देने तथा भावी मत्स्यिकी पेशेवरों की क्षमता निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. जेसना पी. के., डॉ. सोनालिका साहू, श्रीमती सुमित्रा देवी, एस., और श्री गौरव कुमार ने किया।

पूरा कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई के पर्यवेक्षण में, तथा डॉ. डी. भक्त के नेतृत्व में एनएमसीजी शोधार्थियों के सहयोग से संपन्न हुआ।

कायमकुलम, केरल के मछुआरों की संवेदनशीलता का आकलन

कायमकुलम मुहाने के अंतर्स्थलीय मछुआरों की **बहुआयामी संवेदनशीलताओं** का आकलन 16.10.2025 को चूला थेरुवु, कायमकुलम में किया गया। यह कार्यक्रम **"सततता हेतु कायमकुलम मुहाने के मत्स्य संसाधन आकलन एवं पारिस्थितिक निगरानी"**

शीर्षक परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में लगभग 30 **अंतर्स्थलीय मछुआरों** ने भाग लिया। कार्यक्रम का नेतृत्व **डॉ. प्रीथा पनिक्कर** (परियोजना अन्वेषक एवं प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बेंगलुरु) ने किया। कार्यक्रम का उद्घाटन **श्रीमती अनु राज** (मत्स्य विस्तार अधिकारी, अलप्पुझा) द्वारा किया गया तथा अध्यक्षता **श्रीमती निर्मला रॉय** (वार्ड सदस्य, अरट्टू पंचायत, कायमकुलम) ने की।

डॉ. प्रीथा पनिक्कर ने कार्यक्रम की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए हालिया मानवजनित गतिविधियों एवं जलवायु परिवर्तन की पृष्ठभूमि में मुहाने की पारितंत्र संवेदनशीलता के साथ-साथ कायमकुलम के अंतर्स्थलीय मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक संवेदनशीलता के आकलन की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक में **आईसीएआर–सीआईएफआरआई, कोच्चि अनुसंधान केंद्र** के वैज्ञानिक **डॉ. थंकम टी. पॉल** एवं **श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला** ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त, राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारी **श्री अरुण दास, श्रीमती आशा राज एवं श्रीमती मिनी दिनेशन** भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

यह आकलन कार्यक्रम क्षेत्र के मछुआरों की आजीविका सुरक्षा तथा मुहाना पारितंत्र के सतत प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

‘मछली उपभोग के पोषणात्मक एवं स्वास्थ्य लाभ’ विषय पर संवेदीकरण कार्यशाला

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर, कोलकाता ने ब्रह्मपुत्र क्रैकर्स एंड पॉलिमर्स लिमिटेड (BCPL), लेपेटकाटा, डिब्रूगढ़ के सहयोग से 18 अक्टूबर, 2025 को ‘मछली उपभोग के पोषणात्मक एवं स्वास्थ्य लाभ’ विषय पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन सुकाफा भवन, बोरबोरुआह, डिब्रूगढ़, असम में किया। कार्यशाला का उद्देश्य मानव स्वास्थ्य एवं पोषण के संदर्भ में मछली उपभोग के लाभों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना था।

यह कार्यशाला “सेसा नदी, डिब्रूगढ़ (असम) की मछलियों का पोषणात्मक प्रोफाइलिंग एवं मछली उपभोग के स्वास्थ्य लाभों पर संवेदीकरण” शीर्षक शोध परियोजना के अंतर्गत आयोजित की गई, जिसे BCPL, लेपेटकाटा द्वारा अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) कोष से वित्तपोषित किया जा रहा है। कार्यशाला में सेसा नदी के तटवर्ती गांवों के 70 ग्रामीणों ने सहभागिता की।

कार्यशाला में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर; डॉ. बि. के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; इं. चंदन बरुआह, नोडल अधिकारी, सीएसआर प्रकोष्ठ, बीसीपीएल,

डिब्रूगढ़; तथा श्री दिलदार नियोग, मुख्य प्रबंधक, बीसीपीएल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आईसीएआर-सीआईएफआरआई की ओर से डॉ. सिमंकु बोरा, वैज्ञानिक ने कार्यशाला के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई।

अपने संबोधन में डॉ. बि. के. दास ने कार्यशाला के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए मानव स्वास्थ्य एवं पोषण के संदर्भ में मछली उपभोग के लाभों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मछली प्रोटीन आसानी से पचने योग्य होता है और मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित है, जबकि पशु प्रोटीन के संदर्भ में यह बात हमेशा लागू नहीं होती। उन्होंने यह भी बताया कि मछली में संतृप्त वसा की मात्रा कम होने के कारण यह हृदय-स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। मछली का उपभोग हृदय रोगों के जोखिम को कम करता है, हृदय-वाहिका स्वास्थ्य में सुधार करता है तथा मछली में पाए जाने वाले ओमेगा-3 फैटी एसिड विशेष रूप से मस्तिष्क विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, मछली विटामिन एवं खनिजों का समृद्ध स्रोत है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य एवं दृष्टि सुधार में सहायक है।

डॉ. बि. के. भट्टाचार्य ने परियोजना के अंतर्गत की गई गतिविधियों एवं उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अब तक आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा सेसा नदी की 29 मछली प्रजातियों का विस्तृत पोषणात्मक प्रोफाइलिंग किया जा चुका है तथा 26 अन्य प्रजातियों का विश्लेषण प्रगति पर है। संस्थान द्वारा मछलियों की सन्निकट संरचना (प्रोटीन, वसा, नमी, राख), खनिज संरचना, फैटी एसिड प्रोफाइल तथा अमीनो एसिड प्रोफाइल का विश्लेषण किया गया है। उन्होंने बताया कि समस्त जानकारी को एक विस्तृत रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित किया जाएगा, जिससे आमजन लाभान्वित होंगे।

इं. चंदन बरुआह ने कहा कि बीसीपीएल, लेपेटकाटा के आसपास एवं सेसा नदी क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बीसीपीएल के सीएसआर कोष के अंतर्गत किए जा रहे विकासात्मक कार्यों एवं उनकी उपलब्धियों की जानकारी दी।

डॉ. सिमंकु बोरा ने बताया कि सेसा नदी में 71 मछली प्रजातियों की समृद्ध जैव-विविधता पाई जाती है और यह हेमिबैग्रस मेनोडा जैसी कई दुर्लभ प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है।

कार्यशाला के समापन पर सेसा नदी के मछुआरों ने इस पहल के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई एवं बीसीपीएल के प्रति आभार व्यक्त किया। मछुआरों ने कार्यशाला पर संतोष व्यक्त करते हुए यह अपेक्षा भी जताई कि दोनों संस्थान भविष्य में सेसा नदी के सीमांत मछुआरों के विकास हेतु मिलकर कार्य करते रहेंगे।

समुदाय-आधारित जलीय कृषि के माध्यम से पुरुलिया की आदिवासी महिलाओं का सशक्तीकरण: आजीविका एवं पोषण सुरक्षा की दिशा में आईसीएआर-सीआईएफआरआई की पहल

पश्चिम बंगाल के पश्चिमी भाग में छोटानागपुर पठार पर स्थित पुरुलिया जिला में आदिवासी जनसंख्या की भागीदारी उल्लेखनीय है, जो जिले की कुल आबादी का लगभग 18.45 प्रतिशत है। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बावजूद, यह जिला लंबे समय से सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहा है। विशेष रूप से आदिवासी महिलाएँ गरीबी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच तथा गहरी लैंगिक असमानताओं के कारण सबसे अधिक वंचित वर्गों में शामिल हैं। इन चुनौतियों का समाधान सतत विकास लक्ष्य–5 (SDG-5), अर्थात् *लैंगिक समानता एवं महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तीकरण*, के अनुरूप है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर द्वारा पुरुलिया जिले के सूखा-प्रभावित क्षेत्रों मानबाजार, पुंचा एवं हुरा में समुदाय-आधारित अंतर्स्थलीय जलीय कृषि को बढ़ावा देने की एक पहल प्रारंभ की गई है। इस

कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय रूप से उपलब्ध वर्षा-आधारित जलाशयों (बांध/बांधों) का उपयोग करते हुए समुदाय-प्रबंधित मत्स्य पालन को प्रोत्साहित करना, जिससे आजीविका एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

इस पहल के अंतर्गत 16 समुदाय-प्रबंधित बांधों (लगभग 140 एकड़ क्षेत्रफल) में मत्स्य पालन गतिविधियाँ प्रारंभ की गई हैं। इससे 48 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) से जुड़ी लगभग 481 आदिवासी महिलाएँ प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हो रही हैं। कार्यक्रम के समर्थन हेतु 25 अक्टूबर, 2025 को 1,620 किलोग्राम गुणवत्तायुक्त मत्स्य बीज एवं 22 टन CIFRI CageGrow आहार का वितरण किया गया। वितरण से पूर्व लाभार्थियों को वैज्ञानिक मत्स्य पालन, तालाब प्रबंधन एवं संसाधन उपयोग पर क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

आय के स्रोतों में विविधता लाने के उद्देश्य से, प्रशिक्षित 30 महिला लाभार्थियों को एफआरपी टैंक एवं शोभाकार (ऑर्नामेंटल) मछली किट भी उपलब्ध कराई गई, जिसके लिए उन्हें आईसीएआर-सीआईएफआरआई में शोभाकार मत्स्य पालन का विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर गोविंदपुर प्राथमिक विद्यालय में एक समुदाय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सुश्री संध्या रानी टुडू, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पश्चिमांचल उन्नयन कार्य विभाग एवं संसदीय कार्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, वरिष्ठ जिला अधिकारीगण तथा आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान यह निर्णय लिया गया कि स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित मछली का 50 प्रतिशत भाग गोविंदपुर प्राथमिक विद्यालय की मिड-डे मील योजना में उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे बच्चों के पोषण स्तर में सुधार होगा।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई, ने कहा कि जलीय कृषि के माध्यम से महिलाओं का सशक्तीकरण न केवल आय में वृद्धि करता है, बल्कि संसाधनों के सतत

प्रबंधन को भी प्रोत्साहित करता है। उन्होंने कहा, *"यह पहल एक अधिक सुदृढ़, आत्मनिर्भर एवं पोषण-सुरक्षित आदिवासी समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगी।"*

कार्यक्रम का समग्र पर्यवेक्षण डॉ. बि. के. दास द्वारा किया गया तथा समन्वय डॉ. अपर्णा रॉय एवं डॉ. दिबाकर भक्त, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा किया गया। इस पहल में श्री सुजीत चौधरी, श्री मानवेन्द्र रॉय, डॉ. अभिषेक साहा एवं डॉ. श्रेया भट्टाचार्य का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। यह पहल विज्ञान-आधारित जलीय कृषि हस्तक्षेपों के माध्यम से लैंगिक सशक्तीकरण, आजीविका संवर्धन एवं पोषण सुरक्षा को एकीकृत करने वाले समावेशी ग्रामीण विकास का एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करती है।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का उद्घाटन किया।

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) में 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक विजिलेंस जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ किया गया, जिसका विषय "Vigilance: Our Shared Responsibility" रहा। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. डी.के. मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विजिलेंस अधिकारी, द्वारा सप्ताह भर की गतिविधियों की रूपरेखा और सतर्कता के महत्व के परिचय से हुई।

इसके पश्चात डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI ने इंटीग्रिटी प्लेज दिलाई। इस अवसर पर संविदा कर्मियों एवं शोधार्थियों सहित 144 कर्मचारियों ने प्रत्यक्ष रूप से प्रतिज्ञा ली, जबकि कई प्रतिभागियों ने ई-प्लेज के माध्यम से सहभागिता की।

सप्ताह के दौरान संस्थान परिसर में लगाए गए बैनर, पोस्टर एवं प्लेकार्ड पारदर्शिता, ईमानदारी और जवाबदेही के संदेश को प्रदर्शित करते रहे, जो अनुसंधान एवं प्रशासन में उच्च नैतिक मानकों के प्रति ICAR -CIFRI की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के दूसरे दिन वॉकथॉन एवं मानव श्रृंखला का आयोजन

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) ने 28 अक्टूबर 2025 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के दूसरे दिन *"सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी"* विषय के अंतर्गत वॉकथॉन एवं मानव श्रृंखला का आयोजन किया।

कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. डी. के. मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सतर्कता अधिकारी द्वारा किया गया। संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधार्थियों ने हाथों में बैनर एवं तख्तियाँ लेकर परिसर में मानव श्रृंखला का निर्माण किया तथा वॉकथॉन में भाग लिया, जिससे ईमानदारी, पारदर्शिता एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता का संदेश दिया गया। डॉ. मीना के अनुरोध पर डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने मानव श्रृंखला एवं वॉकथॉन का मार्गदर्शन करते हुए दैनिक कार्यों में नैतिक आचरण एवं सत्यनिष्ठा के महत्व पर बल दिया।

इस कार्यक्रम में नियमित एवं संविदा कर्मचारी तथा शोधार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। सतर्कता, पारदर्शिता तथा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाले संदेशों से संस्थान परिसर को सजाया गया।

यह आयोजन अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्यों में सतर्कता, पारदर्शिता और उत्तरदायी आचरण को बढ़ावा देने के प्रति आईसीएआर-सीआईएफआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है तथा नैतिक मूल्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में इसके योगदान को रेखांकित करता है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह: चित्रकला प्रतियोगिता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अवसर पर *"सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी"* विषय के अंतर्गत आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) द्वारा 28 अक्टूबर को संस्थान के कर्मचारियों के लिए **चित्रकला प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य समाज पर भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा इसकी रिपोर्टिंग के तरीकों को प्रोत्साहित करना था।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक **डॉ. बसंत कुमार दास** ने संस्थान परिवार के सभी सदस्यों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता में 14 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से विषय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

यह पहल केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का मंच ही नहीं रही, बल्कि सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व और पारदर्शिता को बढ़ावा देने में व्यक्तियों एवं संस्थानों की सामूहिक भूमिका पर सार्थक संवाद का माध्यम भी बनी। प्रतिभागियों की कलाकृतियों में भ्रष्टाचार के गंभीर परिणामों और सतर्कता के महत्व को प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया।

कार्यक्रम का सफल आयोजन **डॉ. ध्रुब ज्योति सरकार**, **डॉ. प्रीतिज्योति माझी** एवं **सुश्री साद्दुपा भौमिक** के समन्वय से संपन्न हुआ। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों के योगदान की सराहना की गई, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण सप्ताह में सत्यनिष्ठा की भावना को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह: तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-

सीआईएफआरआई), बैरकपुर में 29 अक्टूबर 2025 को मुख्यालय परिसर में **तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 11 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और सतर्कता, ईमानदारी तथा नैतिक आचरण के महत्व से जुड़े विषयों पर तात्कालिक भाषण प्रस्तुत किए।

प्रतियोगिता के विषयों में *संस्थानों में ईमानदारी और विश्वास की संस्कृति का निर्माण, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता: राष्ट्रीय प्रगति का मार्ग, सतर्कता की शुरुआत स्वयं से—वह बदलाव बनें जो आप देखना चाहते हैं, भ्रष्टाचार रहित एक दिन—अंतर की कल्पना, अंतरात्मा: हमारे भीतर का सर्वोत्तम सतर्कता अधिकारी* तथा *आचरण में ईमानदारी: जब कोई न देख रहा हो तब भी सही का चयन* शामिल थे।

प्रतिभागियों ने उत्साह, रचनात्मकता और स्पष्टता के साथ अपने विचार व्यक्त किए, जिससे यह प्रतियोगिता पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नैतिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने पर विचार-विमर्श का सशक्त मंच बनी। कार्यक्रम ने सतर्कता को साझा जिम्मेदारी के रूप में सुदृढ़ किया और व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में सत्यनिष्ठा अपनाने के लिए प्रेरित किया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु द्वारा केरल के बनासुरसागर जलाशय में स्थानिक मछलियों के पिंजरा संवर्धन को बढ़ावा देने हेतु प्रदर्शन कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु ने **जनजातीय उप-योजना (टीएसपी)** कार्यक्रम के अंतर्गत 30 अक्टूबर 2025 को केरल के बनासुरसागर जलाशय में स्थानिक मछलियों के पिंजरा संवर्धन को बढ़ावा देने हेतु एक **प्रदर्शन कार्यक्रम** का आयोजन किया। कार्यक्रम में बनासुरसागर एसटी-एससी मत्स्यजीवी सहकारी समिति के लगभग 50 जनजातीय मत्स्यपालकों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम **डॉ. बि. के. दास**, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के मार्गदर्शन तथा **डॉ. एल. एन. मूर्ति**, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र के सहयोग से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रजातीय विविधीकरण के लिए पिंजरा संवर्धन में स्थानिक मछलियों को शामिल करने के महत्व के प्रति मत्स्यपालकों को जागरूक करना था।

इस अवसर पर आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा केरल की **मत्स्यपालन विकास प्राधिकरण (एडीएके)** द्वारा उपलब्ध कराए गए पिंजरों में *Labeo kontius, L. fimbriatus* तथा *Horabagrus brachysoma* के फिंगरलिंग्स का संचयन किया गया। साथ ही, इन स्थानिक प्रजातियों के पिंजरा संवर्धन हेतु मत्स्य आहार का भी वितरण किया गया। **डॉ. प्रीथा पनिक्कर**, प्रधान वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र ने अध्यक्षीय उद्बोधन में केरल की स्थानिक मछलियों के संवर्धन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। **श्री अनिल**, सहायक अभियंता, केरल राज्य विद्युत बोर्ड (केएसईबी) ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए जनजातीय मत्स्यपालकों की आजीविका, बांध सुरक्षा तथा पर्यटन विकास सुनिश्चित करने हेतु बनासुरसागर में मत्स्यन से संबंधित विभिन्न नियामक संभावनाओं पर विचार साझा किए। **डॉ. जेसना पी. के.**, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने पिंजरा संवर्धन की विधियों पर विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम में **श्री सागर दास**, केज तकनीकी प्रबंधक, एडीएके; **श्री नौफाल**, मत्स्य प्रवर्तक, मत्स्य विभाग, केरल सरकार; तथा सहकारी समिति के पदाधिकारी **श्री संदीप के. एन.** (सचिव) और **श्री मोहन दास ए. के.** (अध्यक्ष) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समन्वय **डॉ. प्रीथा पनिक्कर** और **डॉ. जेसना पी. के.** द्वारा तथा सह-समन्वय **डॉ. रम्या वी. एल.** और **डॉ. सिबिनामोल एस.** द्वारा किया गया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने सुदूरबन के हल्दरपारा, कुल्टाली में मॉडल विलेज पहल के तहत दूसरे चरण का इनपुट वितरण संपन्न किया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने **SBI-CSR परियोजना** के अंतर्गत हल्दरपारा, कुल्टाली, बासंती ब्लॉक, साउथ 24 परगना में **मॉडल विलेज विकास पहल** के दूसरे चरण का इनपुट वितरण सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण समुदायों में आजीविका के अवसर बढ़ाना और सतत् मत्स्य पालन प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

इस चरण में चयनित लाभार्थी मत्स्यपालकों को आवश्यक मत्स्य पालन इनपुट जैसे मछली के बीज, आहार और अन्य सामग्री वितरित की गई। ICAR-CIFRI, बैरकपुर ने SBI-CSR परियोजना के अंतर्गत हल्दरपारा, कुल्टाली के **100 लाभार्थियों** को **1200 किग्रा मछली के बीज और 12 मीट्रिक टन केज ग्रो फीड** प्रदान किया।

इस पहल का उद्देश्य हल्दरपारा गांव को **मॉडल मत्स्य पालन आधारित आजीविका केंद्र** के रूप में विकसित करना है, जिसमें समुदाय की भागीदारी, वैज्ञानिक मार्गदर्शन और क्षमता निर्माण शामिल है। वितरण से पूर्व, ICAR-CIFRI के अधिकारियों ने

मत्स्यपालकों के साथ संवाद किया और बेहतर उत्पादकता एवं आय सृजन के लिए उन्नत मत्स्य पालन प्रथाओं को अपनाने के महत्व पर बल दिया।

दूसरे चरण से पहले, 28-30 अक्टूबर 2025 के बीच कुल्टाली में **छोटे पैमाने के मत्स्य पालन** पर तीन ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। **डॉ. बि. के. दास**, निदेशक, ICAR-CIFRI ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और प्रशिक्षण पूरा करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सुदूरबन के मत्स्यपालकों को उनके स्थानीय बारिश पर आधारित छोटे जलस्रोतों में छोटे पैमाने के मत्स्य पालन के लिए प्रशिक्षण और क्षमता प्रदान करना था, ताकि उन्हें वैकल्पिक आजीविका विकल्प और अतिरिक्त आय का अवसर मिल सके।

समापन सत्र में, **डॉ. बि. के. दास** ने सभी प्रशिक्षुओं को बधाई दी और विस्तार से बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कैसे उनके जीवनस्तर और आय बढ़ाने में मदद कर सकता है। **श्री लोकमान मोल्ला**, अध्यक्ष, कुल्टाली मिलन तीर्थ समाज ने Dr. B.K. Das को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने और सुदूरबन में मॉडल विलेज पहल शुरू करने के लिए धन्यवाद दिया। यह कार्यक्रम SBI-CSR सहयोग के तहत मत्स्य पालन आधारित ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने ओड़िशा के पंचायत राज संस्थानों के निर्वाचित प्रतिनिधियों का अनुभव यात्रा का आयोजन किया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने 28–30 अक्टूबर 2025 के दौरान ओड़िशा के पंचायत राज संस्थानों (PRIs) के अधिकारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए **एक अनुभव यात्रा** का आयोजन किया। इस यात्रा के लिए ओड़िशा सरकार के पंचायत राज और पेयजल विभाग के अंतर्गत **स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट एंड पंचायती राज (SIRD)** ने प्रतिभागियों का नामांकन किया। यात्रा का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को ग्रामीण विकास और पंचायत राज के क्षेत्र में पश्चिम बंगाल की कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं का प्रत्यक्ष अनुभव और ज्ञान प्रदान करना था।

कार्यक्रम का उद्घाटन **डॉ. बि. के. दास**, निदेशक, ICAR-CIFRI ने किया। उद्घाटन संबोधन में उन्होंने संस्थान के इतिहास, अनुसंधान गतिविधियों और अंतर्देशीय मत्स्य पालन क्षेत्र की ग्रामीण आजीविका और पोषण सुरक्षा में महत्व पर प्रकाश डाला। ओड़िशा के प्रतिनिधियों ने संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और अनुसंधान सुविधाओं के बारे में प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की।

प्रतिनिधि दल ने **साउथ 24 परगना, बासंती ब्लॉक** के तीन ग्राम पंचायतों – **जॉयगोपालपुर, ज्योतिषपुर और झारखली** – का भ्रमण किया। ये क्षेत्र सुदूरबन विश्व धरोहर स्थल में आते हैं। प्रतिनिधियों ने स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों से चर्चा की और देखा कि वे **भूजल पुनर्भरण, प्लास्टिक और जल प्रदूषण नियंत्रण, ग्रामीण स्वच्छता, रोजगार सृजन और आजीविका सुरक्षा** के लिए किन उपायों और विधियों को अपनाते हैं।

इसके अलावा, दल ने **सुदूरबन की मैन्ग्रोव वनस्पति क्षेत्र** का भी दौरा किया और देखा कि ये मैन्ग्रोव तटीय क्षेत्रों में मृदा संरक्षण में कैसे योगदान देते हैं। स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रतिनिधियों को **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और ग्रामीण समुदाय पर उसके प्रभावों का मुकाबला करने में पंचायतों की भूमिका** समझाई।

अंततः अनुभव यात्रा ओड़िशा के पंचायत राज संस्थानों के अधिकारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा **संतोषजनक प्रतिक्रिया** के साथ समाप्त हुई। इस अनुभव यात्रा का सफल आयोजन **डॉ. अपर्णा रॉय** और **डॉ. पी. के. परिदा** द्वारा किया गया, जो **डॉ. बि. के. दास**, निदेशक, ICAR-CIFRI के नेतृत्व में संपन्न हुई।

এই সময় সংবাদপত্র

পুরুলিয়ায় প্রান্তিক আদিবাসী মহিলা মৎস্যজীবীদের জীবন ও জীবিকার উন্নয়নে সিফরির মানবিক প্রয়াস

সুব্রত সরকার

রুক্ষ শুষ্ক পুরুলিয়া, পশ্চিমবঙ্গের পশ্চিম প্রান্তে অবস্থিত ছোটনাগপুর মালভূমির একটি অনুন্নত জেলা। যেখানে প্রায় ১৮.৪৫ শতাংশ আদিবাসী জনগোষ্ঠীর বসবাস। চির পরিচিত ছৌ নাচ, সমৃদ্ধ সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য, অযোধ্যা পাহাড়, পলাশ ফুলের আকর্ষণ, মহুয়ার মাদকতা— বিপুল পর্যটন সম্ভাবনা থাকা সত্ত্বেও পুরুলিয়ার আদিবাসী নারীরা এখনও দরিদ্র, লিঙ্গ বৈষম্য, অল্পবয়সে বিয়ে, শিক্ষা ও স্বাস্থ্যসেবার অভাব সহ নানান সামাজিক-অর্থনৈতিক সমস্যার মুখোমুখি হচ্ছেন। এই প্রেক্ষাপটে, স্থায়ী উন্নয়নের লক্ষ্য (SDG)-৫ : 'নারী ও ...

... ইনস্টিটিউট (সিফরি) ব্যারাকপুর, একটি যুগান্তকারী পদক্ষেপ গ্রহণ করেছে।

সিফরি তাদের তপশিলি উপজাতি প্রকল্পের অধীনে (STC) পুরুলিয়ার পুঞ্চা, মানবাজার ও পার্শ্ববর্তী ব্লকগুলির পরিত্যক্ত জলাশয় এবং বৃষ্টি নির্ভর জলধারাকে বিজ্ঞানসম্মত ভাবে কাজে লাগিয়ে পশ্চাৎপদ আদিবাসী নারীদের মৎস্যচাষভিত্তিক জীবিকা উন্নয়ন কর্মসূচি গ্রহণ করেছে। এই উদ্যোগের মাধ্যমে স্থানীয় বৃষ্টিনির্ভর জলাশয় বা 'বাঁধ'-এ বিজ্ঞানসম্মত পদ্ধতিতে মাছ চাষ শুরু করা হয়েছে। মোট ১৬টি বাঁধে, প্রায় ৪০ একর জলাশয় জুড়ে ৬৮টি নারী ...

Tuesday 28 October 2025

AgroSpectrum — Envisaging Future Updating Present — www.agrospectrumindia.com

ICAR-CIFRI's aquaculture push blends gender inclusion, nutrition security and rural enterprise

AQUACULTURE 28 Oct 2025 | Tuesday

In a landmark move toward inclusive rural development, the ICAR–Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, has launched a community-based aquaculture initiative in Purulia, West Bengal, to empower tribal women through sustainable fish farming.

Implemented under the Scheduled Tribe Component (STC), the programme integrates scientific aquaculture, income generation, and nutritional enhancement, directly benefiting over 500 tribal families. The initiative targets the drought-prone Chotanagpur Plateau region—where nearly 18.45 per cent of residents belong to tribal communities—with an emphasis on strengthening women's participation in the blue economy.

Aligning with Sustainable Development Goal 5 (SDG 5) on gender equality, the project spans Puncha, Manbazar, and adjoining blocks, introducing community-managed fish farming in locally available rainfed water bodies, or bandhs. Sixteen such bandhs, covering 140 acres, have been brought under scientific fish culture through 48 women-led Self-Help Groups (SHGs).

To enable the transition, ICAR-CIFRI supplied 1,600 kg of quality fish seed and 22 tonnes of CIFRI cage grow feed, while conducting hands-on training in pond management, water quality control, and feeding practices. The institute also distributed four FRP boats and organized awareness camps in partnership with the local NGO May I Help.

Sandhyarani Tudu, Minister of State (Independent Charge), Paschimanchal Unnayan Affairs, Government of West Bengal, and Dr. B.K. Das, Director, ICAR-CIFRI, inaugurated the initiative, commending the effort to integrate women into profitable and climate-resilient aquaculture systems.

A unique feature of the programme is its nutrition-linked livelihood model—where 50 per cent of the fish harvest from SHGs will supply local schools' mid-day meal schemes, enhancing protein intake among tribal children.

In addition, ICAR-CIFRI distributed FRP tanks and ornamental fish kits, including aerators, feed, and livebearer fishes, to promote backyard aquaculture and supplementary income among tribal women in Govindapur.

Dr. Das noted, "Empowering women through fisheries is not just about livelihood—it's about transforming communities. By building capacity and self-reliance, we are creating a sustainable model for inclusive rural growth."

With tangible benefits already reaching 511 marginalized tribal families, the initiative marks a significant stride toward Atmanirbhar Bharat, blending technology, gender inclusion, and nutrition security in one integrated aquaculture framework.

dailyhunt News

Anwar Hussain @pairokarmedia

ICAR-CIFRI's Aquaculture Initiative Sparks Sustainable Growth and Empowerment in the Sundarbans

Sundarbans, West Bengal – October 9, 2025

Pen culture demonstration of Systomus sarana in Tamrangabeel, Assam under ICAR-WorldFish Collaboration

KOLKATA(KCN):ICAR-CIFRI successfully carried out Front Line Demonstration of Systomussarana (Olive barb) in CIFRI HDPE pen enclosure in Tamrangabeel, Bongaigaon district, Assam under ICAR-WorldFish Collaborative Project. On the occasion of successful harvest of fishes reared in pens, a Field Day on "Harvest of fishes reared in Pens" andan awareness program on 'Pen culture in beels for livelihood' was organized on 14.10.2025 at Tamrangabeel. The programme was organized under the overall guidance of Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Barrackpore; Dr. S. K. Majhi, Head andDr. B. K. Bhattacharjya, Principal Scientist, ICAR-CIFRI RC, Guwahati. Itwas coordinated by Dr. Pronob Das, Senior Scientist; Dr. S. Borah, Scientistand Mr. M. Hoque, YP-II, ICAR-CIFRI RC, Guwahati.ShriHarun Rashid Mondal, Sub-Divisional Fishery Officer, Abhyapuri, Bongaigaon district, Govt. of Assam graced the Programme. Mr.P. Kalita, Fishery Development Officer of the district also joined the programme.The programme was attended by 60 people including beel lessee, fish farmers, officials, and Scientists. Dr. P Das welcomed the participants and dignitaries for the day-long programme and explained the purpose of the programme. Dr. B. K. Bhattacharjyabrief about the details of the successful pen culture demonstration carried out by the Institute in the beel. He also explained about the role of beel fisheries for livelihood improvement of the local fishers. Dr. B. K. Dasaddressed the gathering and explained about the on-going activities of ICAR-WorlFish collaborative project in West Bengal and Assam. He also brief about thesignificant activities of the Institute in Northeastern region for development of openwater fisheries. He emphasized on participation of community for sustainable management of beel fisheries including pen culture. He opined that the ICAR-CIFRI will continue to explore for diversification of high value species in pen enclosure in Tamrangabeel for enhancing income of the fishers. He also assured the fishers for providing technical and critical input support for improving livelihood of the beel dependent fishers. Mr. Kalita informed about the different fisheries development schemes available fishers/farmers from Govt. He urged fishers to avail insurance scheme available for them.Mr. H. R. Mondal thanked ICAR-CIFRI for successfully demonstrating pen culture of high value fish in the beel. He urged the fishers for large scale adoption of pen culture in the beel. Mr. Uttam Kumar Das, Lessee of Tamrangabeelexpress gratitude to ICAR-CIFRI for providing technical and input support for development of the beeland requested for continuing their support in future. Scientists of ICAR-CIFRI also addressed the queries raised by the participants on different aspects of beel fisheries management. The programme ended with a formal vote of thanks proposed by Dr. S. Borah.On the occasion, Systomussarana (Olive barb) reared in CIFRI HDPE pens were harvested successfully.Dr. B. K. Das mentioned that adoption of pen culture in beels will enhance fish production and income of the fishers as evident from the present demonstration.

আরো খবর

RNI No. WBBEN/2005/20115
Email ID arokhabarbangla2007@gmail.com
৯ কার্তিক ১৪৩২ সোমবার • 27 OCTOBER 2025 MONDAY

আদিবাসী নারীদের জীবিকার উন্নয়নে অভিনব উদ্যোগ

আরো খবর প্রতিবেদন: পশ্চিমবঙ্গের পশ্চিম প্রান্তে অবস্থিত ছোটনাগপুর মালভূমির একটি জেলা পুরুলিয়া। যেখানে প্রায় ১৮.৪৫ শতাংশ আদিবাসী জনগোষ্ঠী বসবাস করেন। ...

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,

(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन),

बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जासकती है